दिल्ली-पांडव भवन। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित योगानुभूति कार्यक्रम में अपने आशीर्वचन से सभी को लाभान्वित करते हुए राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी। साथ हैं ब्र.कु. पुष्पा।

रामपुर-मनिहारान-उ.प्र.। जगदम्बा सरस्वती के पुण्य स्मृति दिवस पर पुष्प अर्पित करते हुए क्षेत्राधिकारी प्रेमवीर सिंह राणा, बाबूराम जी व ब्र.कु. संतोष।

चुरू-राज.। अंतर्राष्ट्रीय तम्बाकू निषेध दिवस पर रेलवे स्टेशन पर लगाई गई प्रदर्शनी में यज्ञकुण्ड में नशे की आहुति देने की जानकारी देते हुए ब्र.कु. सुमन।

फतेहगढ़-उ.प्र.। मातेश्वरी जगदम्बा के स्मृति दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में नगरपालिका अध्यक्षा वत्सला अग्रवाल को शॉल पहनाने के बाद ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सुमन।

देवघर-वैद्यनाथ(झारखण्ड)। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित 'राजयोग द्वारा स्वस्थ एवं सुखी समाज' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए दायें से पण्डित डॉ. मोहनानन्द मिश्र,पूर्व प्राचार्य,संस्कृत महाविद्यालय, डॉ. दिवाकर कामत, विष्णु भट्टाचार्य, मुख्य प्रबंधक,यूको बैंक व ब्र.कु. रीता।

भुवनेश्वर-फॉरेस्ट पार्क। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए बालकृष्ण साहू,पूर्व जी.एम.,डी.आई.सी., ब्र.कु. गीता, श्रीमती जयमाला साहू, डॉ. शिल्पा व गीता पाटा,डायरेक्टर,होली डे रिज़ॉर्ट।

दादी का जीवन ही एक आदर्श था

दादीजी विश्व की दादी बन गई थीं। ब्राह्मण परिवार ही नहीं बल्कि अन्य सब भी उन्हें उच्च आदर की नज़र से देखते थे। इस संसार के लोग महान पुरुषों की महिमा करते हैं परन्तु दादीजी की महिमा स्वयं भगवान करते थे। ईश्वरीय सेवा में ही उन्हें सुख भासता था। वे अति सरल, साक्षी व समर्पण भाव में नैचुरल रूप से रहती थीं, यही उनकी प्रसन्नता का राज़ था। जब वे यज्ञ की मुख्य प्रशासिका बनीं तब केवल 150 सेवाकेन्द्र थे और जब उन्होंने इस संसार से विदाई ली तो 8000 सेवाकेन्द्रों का विशाल वटवृक्ष चारो ओर अपनी शीतल छाया प्रदान कर रहा था। दादी ने सेवाओं का विस्तार देखते हुए ओमशान्ति मीडिया न्यूज़ पेपर निकालने का निर्णय लिया, ताकि सभी ईश्वरीय सेवाओं से अवगत हो सकें।

-ब्र.कु. करुणा,सूचना एवं जनसम्पर्क निदेशक,ब्रह्माकुमारीज़

भारत के तत्कालिन राष्ट्रपति महामहिम डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए दादी प्रकाशमणि, ब्र.कु. निर्वैर, दादी हृदयमोहिनी व ब्र.कु. मुन्नी।

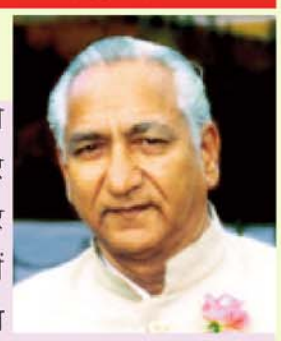

भले ही दादी जी अब हमारे बीच साकार रूप में नहीं हैं, लेकिन उनके साथ ईश्वरीय सेवा में बिताये हुए 48 वर्ष मेरे हृदय पटल पर अथवा मन की स्क्रीन पर ऐसे अंकित हैं कि मुझे हर समय अव्यक्त बापदादा और दादी जी दोनों साथ-साथ महसूस होते हैं। चाहे मैं योग अभ्यास में हूँ या ईश्वरीय सेवा में हूँ, दादी के साथ का मेरा अनुभव मुझे यही प्रेरणा देता है कि मैं दादीजी के साथ-साथ कल्प के आदि से अंत तक भाई-बहन के सम्बन्ध से सदा पार्ट बजाता रहूँगा। दादीजी की प्रेरणाएं व शिक्षाएं हम सभी को उनकी साकार अनुभूति कराती रहती हैं।

-ब्र.कु. निर्वैर,महासचिव,ब्रह्माकुमारीज़

स्वयं की सुरक्षा का पर्व है रक्षाबंधन

सुंदर एवं पवित्र संकल्पों से मन को सींचकर स्वयं की सुरक्षा कर सकते हैं। कहा भी जाता है ''मन के हारे हार है, मन के जीते जीत''। पवित्र, शुद्ध विचारों से मन को मज़बूत बनाकर आत्मिक भाव रखकर स्वयं की रक्षा संभव हो सकती है।

रक्षाबंधन का मार्मिक/ तार्किक अर्थ है स्वयं की और दूसरों की रक्षा हेतु सूत्र बांधना, संकल्प लेना या वचनबद्ध होना। जिस प्रकार शरीर को सुरक्षित तथा ताकतवर बनाए रखने के लिए रोज़ हम योगा, कसरत या व्यायाम करते हैं और साथ ही अच्छा पौष्टिक भोजन देते हैं, उसी प्रकार श्रेष्ठ, सुंदर एवं पवित्र संकल्पों से मन को सींचकर स्वयं की सुरक्षा कर सकते हैं। कहा भी जाता है ``मन के हारे हार है, मन के जीते जीत''। पवित्र, शुद्ध विचारों से मन को मज़बूत बनाकर आत्मिक भाव रखकर स्वयं की रक्षा संभव हो सकती है। यह रक्षा-सूत्र कलाई पर बांधकर सामने वाले के लिए शुभ भावना, शुभ कामना दी जाती है।

रक्षाबंधन का एक दूसरा अर्थ

रक्षाबंधन का एक दूसरा अर्थ है पवित्र, पावन और शुद्ध बनना, बुराइयों का त्याग करना एवं जीवन में दृढ़ता लाना। भौतिक रीति से आज के समय में किसी की भी रक्षा कर पाना या हो पाना मुश्किल है, क्योंकि यह संसार नश्वर है, तो शरीर भी नश्वर है। आत्मा जो दिव्य, अति सूक्ष्म, चैतन्य शक्ति है, वह ही अजर, अमर, अविनाशी है जिसे कोई मार नहीं सकता, जो शाश्वत है। फिर रक्षाबंधन का महत्व कैसा? वास्तव में मनुष्य आत्मा ही स्वयं का मित्र व शत्रु है। वह स्वयं ही स्वयं की रक्षा कर सकता है या सिर्फ सर्वशक्तिवान परमपिता परमात्मा शिव ही सबकी रक्षा कर सकते हैं जो कि निराकार, ज्योतिस्वरूप, जन्म-मरण से न्यारे, हैं।

सृष्टि चक्र की महत्वपूर्ण गतिविधि का हिस्सा

रक्षाबंधन मनाने के पीछे बहुत ही गूढ़ और सुंदर आध्यात्मिक रहस्य है कि पवित्र राखी

का धागा या रक्षा-सूत्र जो सीधी कलाई पर बांधा जाता है, हमें याद दिलाता है कि विकारों भरी इस दुनिया में कैसे पवित्र, आत्मिक स्मृति में रहकर निर्विकारी जीवन जीएं। पावन और सभी सांसारिक विकारों से मुक्त यह जीव आत्मा को उसके मूल स्वधर्म शांति व प्रेम की स्मृति दिलाता है। रक्षाबंधन कोई संसार की भौतिकता को भोगने वाला त्योहार नहीं है बल्कि सभी आत्माओं एवं तत्वों को पवित्र बनने का संदेश देने वाले सृष्टि चक्र की महत्वपूर्ण गतिविधि का हिस्सा है। इसकी शुरुआत महाशिवरात्रि के दिन से होती है जब परमपिता शिव अवतरित होकर सभी आत्माओं को पवित्रता रूपी राखी अर्थात् मन, कर्म, वचन से पवित्र बनने तथा श्रेष्ठ, शुभ, पवित्र संकल्पों द्वारा जीवन को सुरक्षित करने का मार्ग बताते हैं। पीला धागा नवीनता, बसंत की ताज़गी, नए युग के आरंभ व जगदम्बा सरस्वती का रंग जो पवित्रता की देवी हैं का यादगार स्वरूप है। फिर बहनें राखी पर भाइयों को तिलक लगाती हैं, जो संदेश देता है कि आप भृकुटि में विराजमान चैतन्य ज्योतिर्बिन्दु स्वरूप आत्मा हो। आप उसके स्वमान में टिककर स्वयं को शरीर के भान से मुक्त करो। बहनों भाइयों का मुख मीठा करवाती हैं, जिसका आध्यात्मिक अर्थ है कि आप सभी के मुख के साथ-साथ दिल, बोल तथा संकल्प/ जीवन मीठा करें। संसार में व्याप्त दुःख-क्लेश, तनाव, अशांति, रोग-शोक से सबको मुक्त करने हेतु परमात्मा शिव से शक्तियाँ अर्जित कर सभी आत्माओं को प्रदान करें।

रक्षाबंधन का मुख्य उद्देश्य है ही पवित्रता और संस्कारों की राखी बांधना और दिव्य, सात्विक गुणों, श्रेष्ठ ज्ञान को धारण करना व कराना। यह समय ही सभी आत्माओं के पवित्र बनने और विश्व परिवर्तन का है।

ऐतिहासिक महत्व क्या है?

पुराने ज़माने में रक्षाबंधन के उत्सर्ग में ऋषि-मुनि दर्शन करने आने वालों को आशीर्वाद रूप में राखी बांधते थे। संत-महात्मा बुरी शक्तियों से बचने हेतु रक्षा-सूत्र पहनते थे। इसे `पाप तोड़क', `पुण्य प्रदायक' पर्व जो `पाप का विनाश कर पुण्य की स्थापना करे, भी कहा जाता है'। इतिहास में चित्तौड़ की रानी कर्णावती का ज़िक्र है जिन्होंने मुगल शासक हुमायू को राखी भेजकर बहादुर शाह ज़फ़र से रक्षा की गुहार की थी। हालांकि हुमायू समय पर नहीं पहुंच पाया और रानी कर्णावती को जौहर स्वीकार करना पड़ा। वहीं आधुनिक इतिहास में भी इसका उदाहरण मिलता है, जब नोबल पुरस्कार विजेता रवीन्द्रनाथ टैगोर ने बंगाल विभाजन के बाद हिंदुओं और मुसलमानों से एकजुट होने का आग्रह किया था तथा दोनों सम्प्रदायों से एक-दूसरे की कलाई पर रक्षा-सूत्र बांधने का निवेदन किया था। -ब्र.कु. निधि,सर्वोदय नगर कानपुर